शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-4, Issue-1
15 Jan-2013

वैवाहिक एवं पारिवारिक मूल्यों पर व्यावसायिक शिक्षा का प्रभाव

डॉ० उपासना
प्रवक्ता, समाजशास्त्र, रा०बा०इ० का०, श्रीनगर, गढ़वाल

डॉ० किरन डंगवाल
एसोसिएट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग,
हे०न०ब०ग० विश्वविद्यालय, गढ़वाल, (उत्तरांचल)

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

वैवाहिक एवं पारिवारिक मूल्यों पर व्यावसायिक शिक्षा का प्रभाव

- डॉ० उपासना
- डॉ० किरन डंगवाल

वैश्वीकरण ने संयुक्त परिवार से एकाकी परिवार में रूपान्तरण की प्रक्रिया को तीव्र कर दिया है। सामाजिक परिवर्तन की यह प्रक्रिया स्वतःस्फूर्त है या अनुकरण मात्र। इस ओर संकेत करता हुआ यह अध्ययन व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त कर रही युवतियों में पारिवारिक मूल्यों के प्रति समकालीन दृष्टिकोण को अभिव्यक्त करता है।

विषय संकेतः- व्यावसायिक शिक्षा, पारिवारिक मूल्य

समाज की निरन्तरता को बनाए रखने के लिए विवाह एवं परिवार महत्त्वपूर्ण संस्था है। आदर्श रूप में हिन्दू जीवन चार अवस्थाओं में विभक्त है। जीवन का यह चतुष्वर्गीय विभाजन ही आश्रम व्यवस्था है। आश्रम जीवन के विभिन्न सोपानों और उससे जुड़े धर्म मूल्यों के निष्पादन की अभिव्यक्ति है। यह चार अवस्थाएँ ब्रह्मचर्य आश्रम, गृहस्थ आश्रम, वानप्रस्थ आश्रम और सन्यास आश्रम है। चारों अवस्थाओं का अपना-अपना महत्त्व है लेकिन इनमें सबसे श्रेष्ठ गृहस्थ आश्रम को माना गया है। गृहस्थ आश्रम में प्रवेश विवाह संस्कार के माध्यम से होता है। प्राचीन काल से ही विवाह एक महत्त्वपूर्ण संस्था रही है। जिसके द्वारा समाज में निरन्तरता बनी रहती है। समय के साथ-साथ विवाह जैसे महत्त्वपूर्ण संस्था में काफी परिवर्तन हुए हैं। पहले अपनी ही जाति में विवाह को मान्यता प्राप्त थी तथा जाति के बाहर विवाह करने वाले व्यक्ति को जाति से बहिष्कृत कर दिया जाता था। विवाह का निर्णय घर के मुखिया द्वारा लिया जाता था। बाल विवाह, बहुपत्नी विवाह, बेमेल विवाह का प्रचलन था। औद्योगीकरण, नगरीकरण, शिक्षा का प्रचार-प्रसार, सामाजिक विधानों के परिणामस्वरूप विवाह संस्था में कई परिवर्तन दृष्टिगोचर हुए हैं। अन्तर्जातीय विवाह का प्रचलन, विलम्ब विवाह, विवाह का निर्णय युवक-युवतियों द्वारा लिए जाना प्रमुख है। अब विवाह पारंपरिक संस्कार न रहकर एक समझौते का रूप लेता जा रहा है।

यह शोध अध्ययन विवाह और विशेष रूप से व्यावसायिक शिक्षा के दृष्टिकोणों के संबंध में हैं। विवाह और शिक्षा के संबंध में एलीन रास ने बंगलूर के शहरी परिवार का क्षेत्र अध्ययन करने के बाद इन शब्दों में सारांश प्रस्तुत किया है ''कुल मिलाकर इस अध्ययन से प्रकट है कि मध्य और उच्च वर्गों की हिन्दू लड़कियों को शिक्षा अभी तक विवाह के उद्देश्य से दी जाती है, आजीविका के लिए नहीं। किन्तु बहुत से माँ-बाप अपनी लड़कियों को विश्वविद्यालयों में पढ़ाने के उत्सुक थे। शायद इस नई प्रवृत्ति का एक मुख्य कारण यह है कि बाल विवाह के बजाय वयस्क विवाह प्रारम्भ होने से उन्नीस से पच्चीस वर्ष तक लड़कियों के अवकाश के समय को भरना आवश्यक है और विवाह तक 'उन्हें व्यस्त रखने का' एक उपाय कॉलेज है। एक अन्य कारण कई लोगों ने यह बताया कि अपनी लड़कियों के लिए उपयुक्त वर मिलने में कठिनाई के कारण कभी-कभी माँ-बाप उनकी शिक्षा चाहते हुए भी आगे पढ़ाये जाते हैं।[1] लड़कियाँ आज केवल विवाह या योग्य वर की प्राप्ति के लिए ही शिक्षा ग्रहण नहीं करती है बल्कि वह आत्मनिर्भर बनने के लिए शिक्षा को आवश्यक मानती हैं। माता-पिता तथा लड़कियों के दृष्टिकोण में विवाह सम्बन्ध में काफी परिवर्तन दिखाई देते हैं।

विवाह संस्था के साथ-साथ परिवार संस्था में भी कई परिवर्तन दृष्टिगोचर हुए हैं। परिवार वह महत्त्वपूर्ण संस्था है जो एक जैविक प्राणी को सामाजिक प्राणी बनाने में सहयोग करती है। भारतीय समाज की विशेषता संयुक्त परिवार प्रणाली रही है। इरावती कर्वे के अनुसार-संयुक्त परिवार ऐसे व्यक्तियों का समूह है जो

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-4, Issue-1
15 Jan-2013

वैवाहिक एवं पारिवारिक मूल्यों पर व्यावसायिक शिक्षा का प्रभाव

डॉ० उपासना
प्रवक्ता, समाजशास्त्र, रा०बा०इ० का०, श्रीनगर, गढ़वाल

डॉ० किरन डंगवाल
एसोसिएट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग,
हे०न०ब०ग० विश्वविद्यालय, गढ़वाल, (उत्तरांचल)

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

एक ही घर में रहते हैं, एक रसोई का बना भोजन करते हैं, जिनकी सम्पत्ति का स्वरूप संयुक्त होता है, पूजा-उपासना में मिल-जुलकर हिस्सा लेते हैं तथा किसी न किसी रूप में एक दूसरे से रक्त सम्बन्धित होते हैं।[2] परिवार एक आधारभूत संस्था है जहाँ मनुष्य के जीवन की विविध आवश्यकताओं की पूर्ति होती है। वर्तमान समय में शिक्षा सम्बन्धी सुविधाओं, भौतिकवादी संस्कृति, अपनत्व की कमी, महिलाओं के अधिकारों में वृद्धि एवं स्वतंत्रता की भावना के कारण परिवार के स्वरूप में परिवर्तन हुआ है। आज व्यक्ति एकाकी परिवार में रहना ही अच्छा मानता है। एकाकी परिवार में बच्चों तथा महिलाओं को भी पूर्ण स्वतन्त्रता होती है जबकि संयुक्त परिवार में इसका अभाव रहता है, क्योंकि संयुक्त परिवार में शक्ति मुखिया में केन्द्रित होती है। व्यक्ति स्वतन्त्रता चाहता है जिस कारण संयुक्त परिवार एकाकी परिवार में परिवर्तित हो जाते हैं।

उद्देश्य :

शिक्षा व्यक्ति के जीवन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शिक्षा के माध्यम से ही व्यक्ति के जीवन में अभूतपूर्व परिवर्तन हुए हैं। महिलाएँ भी इससे अछूती नहीं है। महिलाएँ, जो कि उत्तराखण्ड की जनसंख्या का लगभग आधा हिस्सा है। उनके जीवन में व्यावसायिक शिक्षा के प्रभाव को जानने के लिए इस अध्ययन के माध्यम से निम्न उद्देश्यों को ज्ञात करने का प्रयास किया गया है।

1. व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाली युवतियों की सामाजिक स्थिति ज्ञात करना।
2. युवतियों की आर्थिक पृष्ठ-भूमि के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करना।
3. व्यावसायिक शिक्षा का वैवाहिक मूल्यों पर पड़ने वाले प्रभाव को ज्ञात करना।
4. व्यावसायिक शिक्षा का पारिवारिक मूल्यों के सन्दर्भ में नौकरी/रोजगार से प्रभाव को जानना।

अध्ययन पद्धति एवं क्षेत्र :-

प्रस्तुत शोध कार्य में वर्णनात्मक अनुसंधान अभिकल्प का प्रयोग किया गया हैं। वर्णनात्मक अनुसंधान में विषय के सम्बन्ध में पहले से ज्ञान होता है तथा विषय के सम्बन्ध में विस्तार-पूर्वक अध्ययन किया जाता हैं।

रूड़की शहर के व्यावसायिक शिक्षण संस्थानों से रूड़की इंजीनियरिंग कॉलेज का चुनाव उद्देश्यकृत निदर्शन द्वारा किया गया है। रूड़की इंजीनियरिंग कॉलेज का चयन करने का उद्देश्य यह था कि वर्तमान में व्यावसायिक शिक्षा के क्षेत्र में अधिकता होने के कारण सभी क्षेत्रों का अध्ययन सम्भव नहीं था। अत: प्रस्तुत अध्ययन में व्यावसायिक शिक्षा के इंजीनियरिंग क्षेत्र को चुना गया है। रूड़की इंजीनियरिंग कॉलेज से 150 युवतियों को दैव निदर्शन की लाटरी विधि द्वारा चुना गया है।

युवतियों को सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि :-

1. प्रस्तुत अध्ययन युवतियों से सम्बन्धित है। व्यावसायिक शिक्षा ग्रहण कर रही युवतियों का सर्वाधिक प्रतिशत (76 प्रतिशत) 19 से 21 वर्ष की आयु का है।

2. धर्म के आधार पर युवतियों को हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई, बौद्ध तथा जैन में विभाजित किया गया है। व्यावसायिक शिक्षा में अध्ययनरत् युवतियों का सर्वाधिक प्रतिशत (92.67 प्रतिशत) हिन्दू धर्म की छात्राओं का है।

3. जाति के आधार पर युवतियों को चार वर्गों यथा, सामान्य जाति, पिछड़ी जाति, अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजाति में विभाजित किया गया है। व्यावसायिक शिक्षा ग्रहण कर रही अधिसंख्यक छात्राएँ (65.33 प्रतिशत) सामान्य जाति की हैं।

4. परिवार के स्वरूप के आधार पर स्पष्ट होता है कि व्यावसायिक शिक्षा ग्रहण कर रही युवतियों में 34.67 प्रतिशत संयुक्त तथा 65.33 प्रतिशत एकाकी परिवार की है। उत्तरदाताओं का सर्वाधिक प्रतिशत एकाकी परिवार की छात्राओं का है।

5. निवास क्षेत्र के वर्गीकरण से स्पष्ट होता है। व्यावसायिक शिक्षा ग्रहण कर रही अधिसंख्यक छात्राएँ (86.67 प्रतिशत) शहरी क्षेत्र में निवास करती हैं।

6. व्यावसायिक शिक्षा ग्रहण कर रही शत-प्रतिशत छात्राएँ अविवाहित हैं।

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-4, Issue-1
15 Jan-2013

डॉ० उपासना
प्रवक्ता, समाजशास्त्र, रा०बा०इ० का०, श्रीनगर, गढ़वाल

डॉ० किरन डंगवाल
एसोसिएट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग,
हे०न०ब०ग० विश्वविद्यालय, गढ़वाल, (उत्तरांचल)

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

7. पारिवारिक मासिक आय के आधार पर युवतियों को शून्य से 5000, 6000 से 10000, 11000 से 15000, 16000 से 20000 तथा 21000 से ऊपर के वर्गान्तरालों में वर्गीकृत किया गया है। व्यावसायिक शिक्षा ग्रहण कर रहीं युवतियों का सर्वाधिक प्रतिशत (24.67 %) 6000 से 10000 आय वाले उत्तरदाताओं का है।

सारणी संख्या 1.1, विवाह एवं रोजगार/नौकरी के प्रति युवतियों की राय

विवाह	आवृत्ति	प्रतिशत
पहले	10	6.67
पश्चात	126	84.00
रूचि नहीं	5	3.33
निश्चित नहीं	9	6.00
योग	150	100

आँकड़ों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि 6.67 प्रतिशत छात्राएँ विवाह रोजगार प्राप्त करने के पहले करना चाहती है जबकि 84 प्रतिशत छात्राएँ रोजगार प्राप्त करने के पश्चात विवाह को मान्यता देती है। 3.33 प्रतिशत युवतियों का कहना है कि वे विवाह में कोई रूचि नहीं रखती जबकि 6 प्रतिशत युवतियाँ निश्चित नहीं है कि वह विवाह रोजगार प्राप्त करने के पश्चात करेगी या पहले। आँकड़ों से स्पष्ट होता है कि अधिसंख्यक युवतियाँ रोजगार करने के पश्चात विवाह करना चाहती हैं तथा कुछ प्रतिशत युवतियाँ रोजगार से पहले विवाह को मान्यता देती हैं। वहीं उल्लेखनीय यह है कि आज के युग में विवाह की अनिवार्यता को भी लड़कियाँ स्वीकार नहीं करती है। भले ही उनका प्रतिशत काफी कम है लेकिन यह नया परिवर्तन विवाह के बारे में लड़कियों के विचारों में परिलक्षित होता है। व्यावसायिक शिक्षा ग्रहण कर रही युवतियाँ 16 से 24 वर्ष की आयु की हैं तथा इनमें भी सर्वाधिक संख्या 19 से अधिक आयु की है। यदि विवाह और आयु पर दृष्टि डाली जाये तो यह तथ्य स्पष्ट होता है कि जहाँ पूर्व में लड़कियों का विवाह कम आयु में ही हो जाता था वहीं वर्तमान समय में विवाह की आयु में भी बढ़ोत्तरी हुई है क्योंकि अधिसंख्यक युवतियाँ रोजगार प्राप्त करने के पश्चात विवाह को मान्यता देती हैं।

अन्तर्जातीय व अन्तर्समुदाय के 250 मामलों के आधार पर सी0टी0 कैन्नन (1963) के द्वारा बम्बई में किया गया अध्ययन यह दर्शाता है कि लड़कियों की औसत विवाह आयु 22.4 वर्ष तथा लड़कों की 27.5 वर्ष थी। इस अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि यदि साथी के चुनाव को निश्चय करने की आजादी दे दी जाये तो वर्तमान पीढ़ी की प्रवृत्ति विवाह आयु को बढ़ाने की पक्षधर है।[3]

सारणी संख्या 1.2, विवाह के निर्णय के विषय में युवतियों के विचार

विवाह की इच्छा	आवृत्ति	प्रतिशत
स्वयं की इच्छा से	102	68.00
माता-पिता की इच्छा से	38	25.33
दोनों (स्वयं तथा माता-पिता की इच्छा से)	6	4
परिस्थिति पर निर्भर है	4	2.67
योग	150	100

सारणी संख्या 1.2 के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि 68 प्रतिशत युवतियाँ स्वय की इच्छा से विवाह करना चाहती है, 25.33 प्रतिशत माता-पिता की इच्छा से, 4 प्रतिशत माता-पिता की इच्छा तथा स्वयं की इच्छा दोनों को ही महत्त्व देती हैं तथा 2.67 प्रतिशत युवतियों ने विवाह को परिस्थिति पर छोड़ दिया है। उनका कोई निश्चित मत नहीं है कि विवाह माता-पिता की इच्छा से करेगी या स्वयं की इच्छा से। स्वयं की इच्छा से

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-4, Issue-1
15 Jan-2013

डॉ० उपासना
प्रवक्ता, समाजशास्त्र, रा०बा०इ० का०, श्रीनगर, गढ़वाल

डॉ० किरन डंगवाल
एसोसिएट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग,
हे०न०ब०ग० विश्वविद्यालय, गढ़वाल, (उत्तरांचल)

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

विवाह करने वाली युवतियों का प्रतिशत सर्वाधिक है। इससे यह स्पष्ट होता है कि जहाँ पहले परिवार द्वारा विवाह का निर्णय लिया जाता था, वहीं आज उच्च शिक्षा ग्रहण कर लेने के कारण युवतियाँ निर्णय स्वयं लेने में विश्वास रखती हैं।

सारणी संख्या 1.3, अन्तर्जातीय विवाह के प्रति युवतियों के विचार

विवाह का स्वरूप	आवृत्ति	प्रतिशत
जातीय	93	62
अन्तर्जातीय	38	25.33
कोई जवाब नहीं	5	3.33
निर्धारित नहीं	14	9.34
योग	150	100

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि 62 प्रतिशत युवतियाँ जातीय विवाह को प्राथमिकता देती हैं, 25.33 प्रतिशत अन्तर्जातीय विवाह को पसन्द करती हैं, 3.33 प्रतिशत युवतियों ने कोई जबाब नहीं दिया तथा 9.34 प्रतिशत युवतियाँ निर्धारित नहीं कर पायी कि वे अन्तर्जातीय विवाह करेंगी या जातिय विवाह। आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि अधिसंख्यक युवतियाँ अपनी ही जाति में विवाह करना चाहती हैं। वह आज भी अपनी जाति को ही महत्त्व देती हैं। अन्तर्जातीय विवाह को मान्यता देने वाले उत्तरदाताओं की संख्या काफी कम है परन्तु नगण्य नहीं। इससे स्पष्ट होता है कि युवतियों के दृष्टिकोण में परिवर्तन हो रहा है और वह विवाह में जाति को महत्त्व न देकर जाति से बाहर विवाह करने के लिए भी सहमत हैं जो समाज में युवतियों के दृष्टिकोण में होने वाला परिवर्तन है जिसकी गति अभी धीमी है। बी.वी. शाह (1964) ने बड़ौदा विश्वविद्यालय के 200 छात्रों के अध्ययन में पाया कि 65 प्रतिशत छात्र अपनी ही जाति में विवाह करना चाहते थे, जबकि 35 प्रतिशत छात्रों को जाति के बाहर विवाह करने में कोई आपत्ति नहीं थी।[4] इसी प्रकार के परिणाम प्रस्तुत अध्ययन में भी प्राप्त हुए हैं।

सारणी संख्या 1.4, जीवन साथी की शिक्षा के सम्बन्ध में युवतियों के विचार

प्राथमिकता	आवृत्ति	प्रतिशत
व्यावसायिक शिक्षा	128	85.3
पारम्परिक शिक्षा	19	12.67
निर्धारित नहीं	3	2.00
योग	150	100

सारणी संख्या 1.4 से स्पष्ट है कि 85.33 प्रतिशत युवतियाँ व्यावसायिक शिक्षा ग्रहण किए व्यक्ति को अपने जीवन साथी के रूप में प्राथमिकता देती हैं जबकि 12.67 प्रतिशत युवतियाँ पारम्परिक शिक्षा ग्रहण किए व्यक्ति से शादी करने के लिए तैयार हैं वहीं 2 प्रतिशत युवतियाँ अपने जीवन साथी के प्रति किसी भी प्रकार का कोई निर्णय नहीं लेती हैं। आंकड़ों के आधार पर कहा जा सकता है कि आज युवतियाँ अपने व्यावसाय के प्रति जितनी जागरूक हैं उतनी ही जागरूक वह अपने जीवन साथी के व्यवसाय के प्रति हैं। निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि भौतिकवादी दृष्टिकोण ने युवतियों को भी प्रभावित किया है। अधिक सुख-सुविधाओं को प्राप्त करने के लिए युवतियाँ व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त जीवन साथी को प्राथमिकता दती हैं। जीद्द सरस्वथी ने छात्राओं के अध्ययन में पाया कि अधिसंख्यक छात्राएँ जीवन साथी की अच्छी शिक्षा, व्यवसाय, आकर्षक व्यक्तित्व को प्राथमिकता देती है।[5]

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly
Vol-4, Issue-1
15 Jan-2013

डॉ० उपासना
प्रवक्ता, समाजशास्त्र, रा०बा०इ० का०, श्रीनगर, गढ़वाल

डॉ० किरन डंगवाल
एसोसिएट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग,
हे०न०ब०ग० विश्वविद्यालय, गढ़वाल, (उत्तरांचल)

www.shodh.net
Web Portal of Humanity & Social Science Research

सारणी संख्या 1.5, भावी परिवार के विषय में युवतियों के विचार

परिवार का स्वरूप	आवृत्ति	प्रतिशत
एकाकी	39	26
संयुक्त	1059	72
तय नहीं	2	2
योग	150	100

उपरोक्त सारणी से युवतियों के भावी परिवार के विषय में जानकारी प्राप्त होती है कि 26 प्रतिशत युवतियाँ भावी जीवन में एकाकी परिवार को प्राथमिकता देती है तथा 72प्रतिशत युवतियाँ संयुक्त परिवार को प्राथमिकता देती है। 2 प्रतिशत युवतियाँ तय नहीं कर पा रही है कि वह संयुक्त परिवार में जाना चाहती है कि एकाकी परिवार में।

उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि युवतियों का अधिसंख्यक प्रतिशत संयुक्त परिवार को प्राथमिकता देता है। इसका मुख्य कारण वह सभी सदस्यों का प्रेम, आपत्ति के समय सहयोग, आदि को मानते हैं जबकि जो युवतियाँ एकाकी परिवार को महत्त्व देती हैं वे स्वतन्त्रता के कारण ऐसा चाहती हैं। प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट है कि व्यावसायिक शिक्षा ग्रहण कर रही युवतियाँ संयुक्त परिवार को प्राथमिकता देती है। यह समाज के लिए नयी पहल है। जो संयुक्त परिवर्तन प्रत्यावर्तन का संकेत देता है।

सच्चिदानन्द (1977) ने बिहार के शाहाबाद जिले के 30 ग्रामों के 720 परिवारों का अध्ययन किया। शिक्षा की दृष्टि से परिवारों के स्वरूप के सन्दर्भ में उन्होंने पाया कि शिक्षा के स्तर में वृद्धि के साथ एकाकी परिवार की प्रवृत्ति बढ़ती है। जिन परिवारों का शिक्षा स्तर मैट्रिक या उसके ऊपर था उनमें 39 प्रतिशत परिवार एकाकी और जिन परिवारों का शिक्षा स्तर मिडिल या कम था उनमें एकाकी परिवार का प्रतिशत 24 प्रतिशत ही था। सच्चिदानन्द के अध्ययन से जहाँ यह तथ्य स्पष्ट होता है कि उच्च शिक्षा एकाकी परिवार को बढ़ावा देती है वहीं प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि उच्च शिक्षा ग्रहण करने के पश्चात भी युवतियाँ संयुक्त परिवार को प्राथमिकता देती हैं।[6]

प्रस्तुत अध्ययन में विवाह तथा परिवार पर व्यावसायिक शिक्षा के प्रभाव के विषय में जानकारी मिलती है। विवाह के विषय में राय, जातीय तथा अन्तर्जातीय विवाह, जीवन साथी के विषय में जानकारी, विवाह की इच्छा तथा भावी जीवन में परिवार के स्वरूप के विषय में जानकारी प्राप्त होती है।

अध्ययन के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि अधिसंख्यक युवतियाँ रोजगार के पश्चात विवाह को मान्यता देती हैं। रोजगार से पहले विवाह करने वाली युवतियों का प्रतिशत काफी कम है। 3.33 प्रतिशत युवतियाँ विवाह के सम्बन्ध में कोई रूचि नहीं रखती हैं तथा 6 प्रतिशत युवतियों द्वारा निर्णय नहीं लिया गया कि वह विवाह रोजगार करने से पहले करेगी या बाद मं। विवाह के निर्णय लेने के विषय में अधिकांश युवतियाँ स्वयं निर्णय लेती है जबकि माता-पिता द्वारा निर्णय लेने वाले केवल 25.33% युवतियाँ है। अन्तर्जातीय विवाह के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करने से स्पष्ट होता है कि 62 प्रतिशत जातीय विवाह को मान्यता देती है जबकि 25. 33 प्रतिशत युवतियाँ अन्तर्जातीय विवाह को मान्यता देती हैं। आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि 3.33 प्रतिशत युवतियाँ ऐसी है जिन्होंने कोई जबाव नहीं दिया है, जबकि 9.34 प्रतिशत युवतियों द्वारा निर्धारित नहीं है कि वह जातीय विवाह करेगी या अन्तर्जातीय विवाह। जीवन साथी के विषय में युवतियाँ व्यावसायिक शिक्षा ग्रहण किए व्यक्ति को प्राथमिकता देती है तथा 12.67 प्रतिशत पारम्परिक शिक्षा ग्रहण किये व्यक्ति को प्राथमिकता देती हैं। भावी जीवन में परिवार के स्वरूप के विषय में जानकारी प्राप्त होती है कि अधिसंख्यक युवतियाँ भविष्य में संयुक्त परिवार को प्राथमिकता देती हैं।

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-4, Issue-1
15 Jan-2013

वैवाहिक एवं पारिवारिक मूल्यों पर व्यावसायिक शिक्षा का प्रभाव

डॉ० उपासना
प्रवक्ता, समाजशास्त्र, रा०बा०इ० का०, श्रीनगर, गढ़वाल

डॉ० किरन डंगवाल
एसोसिएट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग,
हे०न०ब०ग० विश्वविद्यालय, गढ़वाल, (उत्तरांचल)

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

एकाकी परिवार की युवतियों द्वारा भी भावी जीवन में संयुक्त परिवार को प्राथमिकता प्रदान की गयी है। इसका कारण उत्तरदाता छात्राएँ यह मानती हैं कि संयुक्त परिवार में सभी सदस्यों का सहयोग एवं स्नेह मिलता है। विपत्ति के समय के परिवार के समस्त सदस्य एकत्रित हो जाते हैं।

निष्कर्ष :-

शिक्षा समाज में परिवर्तन का एक सशक्त माध्यम है शिक्षा ज्ञानार्जन के साथ साथ रोजगार के अवसर भी उपलब्ध कराती है। शिक्षा की इसी आवश्यकता को व्यावसायिक शिक्षा के माध्यम से ही पूर्ण किया जा सकता हैं। युवकों के साथ साथ युवतियों का भी व्यावसायिक शिक्षा के प्रति रूझान बढ़ता जा रहा हैं वे पारिवारिक क्षेत्र के साथ साथ आर्थिक क्षेत्र में भी अपना योगदान दे रहे हैं। इसी तथ्य को ध्यान में रख कर व्यावसायिक शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में युवतियों का प्रतिशत बढ़ता जा रहा है। विवाह व परिवार समाज की महत्त्वपूर्ण संस्थाएँ हैं और युवतियों की दोनों ही संस्थाओं में महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है प्रस्तुत शोध में व्यावसायिक शिक्षा ग्रहण कर रही युवतियों के पारिवारिक व वैवाहिक मूल्यों के प्रति दृष्टिकोण को जानने का प्रयास किया गया हैं। इस अध्ययन से यह स्पष्ट है कि व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त कर रही युवतियों के विचार पर व्यावसायिक शिक्षा का स्पष्ट प्रभाव है। अपने निर्णय एवं विचार के लिए वे अपनी आत्म निर्भरता और आर्थिक स्थितियों से प्रभावित होकर चिन्तन रखती हैं।

सन्दर्भः-

1. रॉस, एलीन डी., 'भारतीय परिवार अपने शहरी परिवेश में', टोरंटो, 1961, पृ0 229।
2. कर्वे, इरावती, 'किनशिप आरगेनाइजेशन इन इंडिया', डकन कॉलेज, पोस्ट ग्रेजुएट एण्ड रिसर्च इन्स्टीट्यूट, पूना 1953
3. Kannan, C.T., 'Inter-caste and Inter Community Marriages in India', Popular Prakashan, Bombay, 1963
4. Shah, B.V., 'Social Change and College Students of Gujrat', M.S. University.
5. Saraswathi, G., 'A survey of girls at different levels of education in the youth culture perspectiv', Ph.D. Education, Karnataka University, 2002
6. Sachichidananda, 'Rural Family in West Bihar', Journal of Social and Economic Studies, Patna, September, 1977

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN